दैनिक एक्सप्रेस न्यूज; भोपाल
6 OCT 2011

बेटियां पावन दुआएं हैं

मध्यप्रदेश में शिवराज सिंह चौहान की अगुआई वाली भाजपा सरकार द्वारा आज से शुरू किया गया परिणामोन्मुखी और चर्चित कार्यक्रम 'बेटी बचाओ अभियान' अपना रंग और असर अवश्य दिखाएगा। हालांकि मध्यप्रदेश उन आठ राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की सूची में है जहां पिछले एक दशक के दौरान बालिका और बालक आबादी के अनुपात में मामूली लेकिन हौसला बढ़ाने वाला सकारात्मक बदलाव दर्ज किया गया है। राज्य सरकार के ताजा अभियान को अगर प्रशासनिक मशीनरी ने ईमानदारी से लागू कराया तथा विभिन्न सामाजिक संगठनों का इसे समर्थन और सहयोग मिला तो आबादी अनुपात में बढ़ रहे असंतुलन से चिंतित अन्य राज्यों को ऐसा ही कोई कदम उठाने की प्रेरणा अवश्य मिलेंगी। शिवराज सिंह चौहान के कार्यकाल में मध्यप्रदेश में विभिन्न वर्गों, समुदायों तथा महिलाओं एवं बालिकाओं के लिए अनेक कल्याणकारी कार्यक्रम शुरू किये गये हैं। उन कार्यक्रमों की सफलता के अपने दावे है तथा उन्हें लेकर आरोप लगाने वालों की अपनी सोच है। यह तथ्य अपनी जगह कायम है कि इन कल्याणकारी कार्यक्रमों के कारण प्रदेश सरकार की एक अलग पहचान बनी है। उसकी सफलताओं की सुगंध दूर-दूर तक महसूस की जा रही है। इसी कड़ी में बेटी बचाओ अभियान को जोड़ना उचित होगा। भारत में केरल और पुदुचेरी तथा कुछ हद तक मिजोरम और मेघालय को अलग रखकर विचार करें तो बालक-बालिका संख्या अनुपात अधिकांश राज्यों में तेजी से असंतुलन की ओर है। सतत् प्रयासों, कार्यक्रमों, प्रचार अभियानों तथा सख्ती के चलते पंजाब और हरियाणा में इस अनुपात में मामूली सुधार हुआ है। वहां स्थिति अभी भी नाजुक बनी हुई है। पंजाब और हरियाणा में प्रति 1000 बालकों में बालिकाओं की संख्या क्रमशः 846 तथा 830 है। बालक-बालिका आबादी में असंतुलन की स्थिति मध्यप्रदेश में भी चिंताजनक है। मध्यप्रदेश में प्रति 1000 बालकों की तुलना में सिर्फ 930 बालिकाएं हैं। यहां राहत की बात यह है कि मध्यप्रदेश में 2001 में प्रति 1000 बालकों की तुलना में 919 बालिकाएं ही थीं। आंकड़ों में सकारात्मक सुधार के इसी तरह चलते रहने पर आबादी अनुपात में काफी बदलाव आने की आशा की जा सकती है। यह सहज उत्सुकता का विषय है कि बालक-बालिकाओं या पुरुषों एवं स्त्रियों की आबादी में गंभीर असंतुलन की वजह क्या है? इसके लिए एक कारण बेटियों को बोझ समझने की भावना है। कुछ गलत धारणाएं और सामाजिक अड़चनें भी जुड़ी हुई हैं। सरकारों ने कन्या भ्रूण हत्याओं पर अंकुश लगाने के साथ-साथ बालिका कल्याण कार्यक्रम जैसे कदम उठाये हैं। फिर भी आशानुकूल सफलता फिलहाल दूर-दूर तक नजर नहीं आ रही। इसकी वजह विभिन्न सामाजिक संगठनों, धर्मगुरुओं और राजनीतिक दलों का तटस्थ रुख है। इन तीन महत्वपूर्ण केंद्रों से तमाम तरह की बातें सुनी जा सकती हैं परंतु आबादी असंतुलन जैसे मुद्दे की बात कितने लोग उठाते हैं? मध्यप्रदेश में बेटी बचाओ अभियान को शुरू करने के लिए ऐसा अवसर चुना गया जिसे देवभूमि के सर्वाधिक पवित्र समय माना जाता है। नवरात्र की नवमीं पर ''बेटी बचाओ अभियान'' की शुरूआत इसकी सफलता के प्रति आश्वस्त कर रही है। राज्य सरकार ने नाजुक रग पर हाथ रखा है। लोगों को बरबस ही याद दिलाया गया है कि जिस देश में महाकाली, महासरस्वती और महालक्ष्मी की पूजा की जाती है, वहां बेटियों को जन्म लेने से रोककर कितना बड़ा या कहें की घोर पाप किया जा रहा है। भारतीय दर्शन में नारी को काफी ऊंचा स्थान दिया गया है। नन्हीं बेटियों से लेकर बुजुर्ग महिलाओं तक नारी के विभिन्न रूप सम्मान भाव से देखे जाते हैं। दृष्टि पवित्र हो तो नन्हीं बच्चियों में साक्षात दुर्गा और गृहणियों में लक्ष्मी के दर्शन होते हैं। आश्चर्य का विषय है कि जिस देश में नारी के हर रूप की वंदना होती रही है वहीं उसके प्रति आज कैसा व्यवहार किया जा रहा है। यह समय का खेल है। गंभीरता पूर्वक विचार करें, कमोवेश हम हर वह काम करने लगे हैं जिन पर हमारे समाज और धर्म ने किसी न किसी प्रकार से रोक लगा रखी थी। इसी के चलते पर्यावरण में असंतुलन आ रहा है। यहां नदियां, वृक्ष और अन्य जीवों को संरक्षण पर जोर दिया गया था। आज उन पर भी खतरा मंडराता रहा है। ऐसी ही स्थिति क्या महिलाओं की नहीं है? पुरुष का अस्तित्व महिलाओं पर टिका है। वो ही नहीं रहेंगी तब पुरुष कहां बचेंगे। बहरहाल, विश्वास करें कि मध्यप्रदेश में शुरू किये गये बेटी बचाओ अभियान का प्रभाव अवश्य दिखेगा। इसकी सफलता के लिए सभी को सहयोग देना चाहिए। राज्य सरकार का प्रयास प्रशंसा का हकदार है।